

॥ ॐ श्री गणेशाय नमः ॥ ॥ श्री भगवान गणेश नमः ॥

श्री गणेश पञ्चरत्न

Ganesh Pancharatnam — संपूर्ण स्तोत्र पाठ, सरल हिंदी भावार्थ एवं पाठ विधि सहित

रचयिता: आदि शंकराचार्य ✓ निःशुल्क प्रामाणिक PDF

॥ संपूर्ण स्तोत्र पाठ (सरल हिंदी भावार्थ सहित) ॥

श्लोक १

मुदाकरात्तमोदकं सदा विमुक्तिसाधकं
कलाधरावतंसकं विलासिलोकरक्षकम्।
अनायकैकनायकं विनाशितेभदैत्यकं
नताशुभाशुनाशकं नमामि तं विनायकम्॥ १॥

भावार्थ: जो अपने कर-कमलों में प्रसन्नतापूर्वक मोदक (लड्डू) धारण करते हैं, जो अपने भक्तों को सदा मुक्ति और मोक्ष का मार्ग प्रशस्त करते हैं, जिनके मस्तक पर बालचंद्र आभूषण रूप में सुशोभित हैं, जो इस संपूर्ण चराचर संसार के परम रक्षक हैं, जो अनाथों व असहायों के एकमात्र नायक व आश्रय हैं, जिन्होंने गजासुर दैत्य का संहार किया और जो अपने शरणागत भक्तों के समस्त अमंगलों और अशुभों का शीघ्र नाश करते हैं, उन भगवान श्री विनायक को मैं बारंबार नमन करता हुँ।

श्लोक २

नतेतरातिभीकरं नवोदितार्कभास्वरं
नमत्सुरारिनिर्जरं नताधिकापदुद्धरम्।
सुरेश्वरं निधीश्वरं गजेश्वरं गणेश्वरं
महेश्वरं तमाश्रये परात्परं निरन्तरम्॥ २॥

भावार्थ: जो अभक्तों और दुष्टों के लिए अत्यंत भयानक हैं, किंतु जो नवोदित (उगते हुए) सूर्य के समान दिव्य तेज से दैदीप्यमान हैं, जिनकी वंदना समस्त देवता और दानव दोनों करते हैं, जो चरणों में झुकने वाले भक्तों को घोर विपत्तियों और संकटों से उबारते हैं, जो समस्त देवताओं के स्वामी (सुरेश्वर), समस्त ऋद्धि-सिद्धियों व निधियों के अधीश्वर (निधीश्वर), गजों के अधिपति और शिवगणों के ईश (गणेश्वर) हैं, उन देवाधिदेव, परात्पर परमात्मा भगवान गणेश का मैं निरंतर आश्रय ग्रहण करता हुँ।

श्लोक ३

समस्तलोकशङ्करं निरस्तदैत्यकुञ्जरं
दरेतरोदरं वरं वरेभवक्त्रमक्षरम्।
कृपाकरं क्षमाकरं मुदाकरं यशस्करं
मनस्करं नमस्कृतां नमस्करोमि भास्वरम्॥ ३॥

भावार्थ: जो समस्त लोकों का कल्याण (मंगल) करने वाले हैं, जिन्होंने मदासुर और दुष्ट दैत्यों का मान-मर्दन कर उनका विनाश किया, जिनका उदर अत्यंत विशाल (लंबोदर) और स्वरूप श्रेष्ठतम है, जिनका मुख सुंदर गजराज के समान दिव्य और जो साक्षात अविनाशी (अक्षर ब्रह्म) हैं, जो कृपा, क्षमा, आनंद और यश प्रदान करने वाले हैं तथा जो अपने चरणों में नमन करने वालों के मन को शुद्ध व स्थिर बनाते हैं, उन तेजोमय भगवान गणेश को मैं श्रद्धापूर्वक नमस्कार करता हुँ।

श्लोक ४

अकिञ्चनार्तिमार्जनं चिरन्तनोक्तिभाजनं
पुरारिपूर्वनन्दनं सुरारिगर्वचर्वणम्।
प्रपञ्चनाशभीषणं धनञ्जयादिभूषणं
कपोलदानवारणं भजे पुराणवारणम्॥ ४॥

भावार्थ: जो निर्धन और दीन-दुखियों के कष्टों व दरिद्रता को हरने वाले हैं, जो अनादि वेदों और उपनिषदों की सूक्तियों के मूल प्रतिपाद्य हैं, जो त्रिपुरारि भगवान शिव के ज्येष्ठ एवं लाड़ले पुत्र हैं, जो देवताओं के शत्रुओं (असुरों) के अहंकार का चूर्ण करने वाले हैं, जो प्रलयकाल में संसार के प्रपंच को समाप्त करने वाले भीषण स्वरूप हैं, जो अग्नि, वायु और धनंजय आदि दिव्य तत्वों से अलंकृत हैं तथा जिनके कपोलों से निरंतर मद-जल बहता रहता है, उन सनातन पुराण-पुरुष गजानन को मैं भजता हुँ।

श्लोक ५

नितान्तकान्तदन्तकान्तिमन्तकान्तकात्मजं
अचिन्त्यरूपमन्तहीनमन्तरायकृन्तनम्।
हृदन्तरे निरन्तरं वसन्तमेव योगिनां
तमेकदन्तमेवतं विचिन्तयामि सन्ततम्॥ ५॥

भावार्थ: जिनके एकदंत की दिव्य कांति अत्यंत मनोहर और चमकीली है, जो यमराज के भी संहारक देवाधिदेव महादेव के आत्मज (पुत्र) हैं, जिनका स्वरूप मन-बुद्धि की कल्पना से परे (अचिन्त्य) और अनादि-अनंत है, जो जीवन के समस्त विघ्नों और अंतरायों को समूल काट डालते हैं, और जो योगियों के हृदय-कमल में निरंतर वास करते हैं, उन परम करुणामय एकदंत भगवान गणेश का मैं सतत ध्यान करता हुँ।

श्लोक ६

महागणेशपञ्चरत्नमादरेण योऽन्वहं
प्रजल्पति प्रभातके हृदि स्मरन् गणेश्वरम्।
अरोगतामदोषतां सुसाहितीं सुपुत्रतां
समाहितायुरष्टभूतिमभ्युपैति सोऽचिरात्॥ ६॥

भावार्थ: जो मनुष्य प्रातःकाल उठकर अपने हृदय में भगवान गणेश्वर का ध्यान करते हुए, श्रद्धा और आदर के साथ इस 'महागणेश पञ्चरत्न स्तोत्र' का प्रतिदिन पाठ करता है, वह शीघ्र ही निरोगी काया (आरोग्य), समस्त दोषों व पापों से मुक्ति, उत्तम विद्या व साहित्य-ज्ञान, सुयोग्य संतान, दीर्घ एवं शांत आयु, तथा अणिमा-महिमा आदि अष्ट-सिद्धियों व ऐश्वर्य को बिना किसी विलंब के प्राप्त कर लेता है।

🪔 नित्य पाठ विधि एवं नियम

- **पवित्रता एवं शुभ समय:** प्रातःकाल सूर्योदय से पूर्व ब्रह्म मुहुर्त अथवा प्रातः पूजा की वेला में स्नानादि से निवृत्त होकर स्वच्छ वस्त्र धारण करें। बुधवार, संकष्टी चतुर्थी, विनायक चतुर्थी अथवा किसी भी नए कार्य के आरंभ में इसका पाठ करना अत्यंत शुभ फलदायी है।
- **आसन एवं दिशा:** पूर्व अथवा उत्तर दिशा की ओर मुख करके ऊनी या कुश के आसन पर बैठें।
- **दीप एवं पूजा सामग्री:** भगवान गणेश के चित्र अथवा विग्रह के सम्मुख गाय के शुद्ध घी का दीपक और सुगंधित धूप प्रज्वलित करें। थाली में रोली, लाल चंदन, अक्षत और गणेश जी की सर्वाधिक प्रिय **२१ दूर्वा (दूब घास)** अवश्य रखें।
- **तुलसी दल का निषेध:** यह शास्त्रीय नियम सदैव स्मरण रखें कि भगवान गणेश की पूजा में **तुलसी पत्र** का प्रयोग सर्वथा वर्जित माना गया है। भोग के लिए मोदक, मोतीचूर के लड्डू अथवा ऋतुफल अर्पित करें।
- **सस्वर एवं शुद्ध पाठ:** स्तोत्र के श्लोकों का शांत, स्पष्ट और सस्वर उच्चारण करें। यदि संस्कृत उच्चारण में संकोच हो, तो प्रत्येक श्लोक के साथ दिए गए सरल हिंदी भावार्थ को मन में धारण करते हुए पाठ करें।

🌸 पाठ के अद्भुत लाभ

- **समस्त अमंगलों और संकटों का शीघ्र नाश:** *"नताशुभाशुनाशकं नमामि तं विनायकम्"* — जो भक्त विनायक के चरणों में नतमस्तक होता है, उसके जीवन के कठिन से कठिन अमंगल, कोर्ट-कचहरी की अड़चनें और व्यापारिक अवरोध तत्काल समाप्त हो जाते हैं।
- **भय-मुक्ति और घोर विपत्तियों से रक्षा:** *"नताधिकापदुद्धरम्... विलासिलोकरक्षकम्"* — भगवान गणेश साधक की हर दिशा से रक्षा करते हैं। आकस्मिक दुर्घटनाओं, शत्रु बाधा और अज्ञात भय से मुक्ति मिलती है।
- **उत्कृष्ट विद्या, बुद्धि और विवेक की वृद्धि:** *"अरोगतामदोषतां सुसाहितीं सुपुत्रतां"* — फलश्रुति के अनुसार, विद्यार्थियों और ज्ञानार्थियों के लिए यह स्तोत्र साक्षात वरदान है। यह स्मृति शक्ति, एकाग्रता और साहित्य-ज्ञान में विलक्षण वृद्धि करता है।
- **आरोग्य लाभ एवं दीर्घायु की प्राप्ति:** *"समाहितायुरष्टभूतिमभ्युपैति सोऽचिरात्"* — नित्य पाठ से मानसिक तनाव दूर होता है, शारीरिक व्याधियों का शमन होता है तथा साधक शांत चित्त और दीर्घायु प्राप्त करता है।
- **अष्ट-सिद्धियों और गृह-समृद्धि का वास:** *"सुरेश्वरं निधीश्वरं गजेश्वरं गणेश्वरम्"* — समस्त निधियों के स्वामी गजानन की कृपा से घर-परिवार में दरिद्रता का नाश होता है और स्थायी सुख, शांति व वैभव का वास होता है।